पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण — मॉड्यूल तीन — यहोशू की पुस्तक का परिचय

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपके विचार से आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. इस्राएलियों ने परमेश्‍वर की इच्छा जानने के लिए चिट्ठियाँ डालने की रीति का प्रयोग किया। हम अपने जीवन के लिए परमेश्‍वर की इच्छा कैसे निर्धारित करते हैं? क्या हमें चिट्ठी डालनी चाहिए? क्यों या क्यों नहीं?
3. परमेश्वर के सम्मान और आज्ञाओं की रक्षा के लिए यरदन के पार के गोत्र अपने साथी इस्राएलियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए तैयार थे। आज इसे कैसे लागू किया जा सकता है? क्या आज मसीहियों को आत्मिक अनुशासन को काम में लाना चाहिए? वह कैसा प्रतीत होगा?
4. इस वर्तमान युग में मसीह के लोग एकता कैसे बनाए रख सकते हैं, जब विश्वासी अनेक संप्रदायों और परस्पर विरोधी धर्मविज्ञानों में बंटे हुए हैं? झूठी शिक्षा को सहे बिना हम इस एकता को कैसे बनाए रख सकते हैं?
5. क्या आप सोचते हैं कि पुराने नियम के इस्राएल के भौतिक भूमि के उत्तराधिकार का नए नियम के विश्वासियों के लिए कोई महत्व है या यह हमारे लिए केवल एक प्रतीकात्मक सीख है? हमें उत्तराधिकार में क्या मिलेगा? क्या इसमें से कुछ भी भौतिक होगा?
6. मसीह में हमें जो “उत्तराधिकार" पहले ही मिल चुका है, उसके कुछ पहलू क्या हैं? कुछ ऐसी वस्तुओं के नाम बताइए जिनके लिए आप विशेष रूप से आभारी हैं? क्या इस्राएल के गोत्रों के आरंभिक उत्तराधिकार और मसीह में आपके उत्तराधिकार के बीच कोई समानताएँ हैं? क्या ऐसे कोई तरीके हैं जिनमें आपका उत्तराधिकार आज भी अधूरा है, जैसे कि इस्राएल की विजय की आरंभिक सीमाएँ? किस रूपों में?
7. यहोशू 22 से हम क्या सीख सकते हैं, विशेषकर उस रीति से जिसमें इस्राएलियों ने एक बड़ी गलतफहमी को दूर किया? क्या आपने कभी किसी के अभिप्रायों को गलत समझा है? आपने बातों को स्पष्ट करने के लिए क्या किया? क्या आपने उस व्यक्ति या उन व्यक्तियों से बात की? क्या आपने दूसरे व्यक्ति को संदेह का लाभ दिया? आपने उस अनुभव से क्या सीखा?
8. किसी ऐसे व्यक्ति या कुछ लोगों के बारे में सोचें जिनके बारे में आपको लगता है कि वे कोई अनैतिक योजना बना रहे हैं। या किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचें जो पहले से ही कुछ ऐसा कर रहा है जो आपके विचार में गलत है। आपको इस स्थिति से कैसे निपटना चाहिए? यहोशू 22 से आप क्या सीख सकते हैं जो सहायक हो सकता है?

**समीक्षा कथन :** इस्राएल तब तक परमेश्वर के राज्य को फैलाने में आगे नहीं बढ़ सकता जब तक सारे गोत्र मिलकर एक प्रजा के रूप में खड़े नहीं होते। यहोशू ने यरदन के पूर्व और यरदन के पार के गोत्रों को एकजुट रहने के लिए प्रेरित किया, जब वे आपसी फूट के खतरे का सामना कर रहे थे। यहोशू के लेखक ने इसके बारे में इसलिए लिखा ताकि मूल पाठक परमेश्वर के लोगों की एकता के महत्व को समझ सकें। अपने मिशन को पूरा करने के लिए उन्हें एकजुट होना होगा।

**विषय का अध्ययन :** यरदन के पूर्व के गोत्रों ने पार के गोत्रों के साथ अपनी एकता के प्रतीक के रूप में एक वेदी बनाई। पार के गोत्रों ने यह गलत समझा कि यरदन के पूर्व के गोत्र मिलापवाले तंबू में नहीं, बल्कि उस वेदी पर परमेश्वर की आराधना करना चाहते थे। वे इस विषय पर युद्ध करने के लिए तैयार थे। लेकिन उन्होंने पहले सच्चाई का पता लगाने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल भेजा। जब उन्हें पता चला कि पूर्व के गोत्रों के उद्देश्य अच्छे हैं, तो युद्ध का खतरा हट गया। उन्होंने वेदी को “साक्षी” कहा। यह सबके लिए साक्षी था कि केवल यहोवा ही परमेश्वर है।

**विषय का अध्ययन 2 :** एक रविवार को कलीसिया सभा के बाद जेन और मार्था एक दूसरे से मिलीं। जेन ने मार्था से पूछना शुरू किया कि वह कैसी है, तभी मार्था बिना कुछ कहे निकल गई। जेन को चिंता हुई कि शायद उसने मार्था को ठेस पहुँचाने वाली कोई बात की हो। इसलिए उसने उस दिन बाद में उसे फोन किया। लेकिन मार्था ने कोई जवाब नहीं दिया। जेन की चिंता बढ़ती जा रही थी और वह तरह-तरह की बातों की कल्पना करने लगी कि मार्था वैसी सच्ची मित्र नहीं थी जैसा जेन ने समझा था। फिर जाकर पता चला कि मार्था की तबियत ठीक नहीं थी। उसी दिन बाद में, उसे पेट में भयंकर दर्द हुआ और उसे अस्पताल ले जाया गया।

**विषय का अध्ययन : 3**  एक रविवार को कलीसिया सभा के बाद तीन लोग बात कर रहे थे, तभी उन्होंने कमरे में कुछ तेज हलचल देखी और कुछ असामान्य आवाजें सुनीं। उन्होंने लोरेटा को कैरी से दूर भागते देखा, जिसके चेहरे पर हैरानी और चिंता की झलक थी। देखनेवालों ने कहा, “मुझे नहीं पता कि क्या हुआ।” वे कैरी के पास जाकर उससे पूछने लगे। उसने कहा, “मुझे नहीं पता कि क्या हुआ। लोरेटा ने अपना सिर उठाया और तेजी से भाग गई। मैं उसे एक साधारण सा सुझाव दे रहा था। मुझे नहीं पता कि क्या वह मेरे इस सुझाव से नाराज हो गई।” बाद में उन्हें लोरेटा मिल गई। उसे आभास हो गया था कि उसकी नाक से खून आने वाला है, और इसीलिए उसने अपना सिर पीछे की ओर किया। फिर वह उसे संभालने के लिए बाथरूम की ओर भागी।

मनन के प्रश्न :

1. विषयों के इन अध्ययनों में, कोई व्यक्ति यह मान लेता है कि वह दूसरे व्यक्ति के इरादों को जानता है, और यह भी मान लेता है कि उसके इरादे बुरे हैं। हम इसे किसी पर “इरादे थोपना" कहेंगे। आप एक कार्य को देखते हैं, शायद आप उनके शब्दों को सुनते हैं, लेकिन आप उनकी प्रेरणा नहीं देख पाते। आप शब्दों और कार्यों के द्वारा प्रेरणा का पता लगाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन यह हमेशा विश्वसनीय नहीं होता।
2. क्या कभी किसी ने आप पर गलत इरादों का आरोप लगाया है? अपना अनुभव साझा करें, और यह भी कि इससे आपको कैसा महसूस हुआ।
3. क्या आपने कभी किसी दूसरे पर झूठे इरादे थोपे हैं? अपना अनुभव साझा करें, और यह भी कि इससे शामिल सभी लोगों को कैसा महसूस हुआ।
4. क्या आपने देखा है कि झूठे इरादों को थोपने से संबंधों को नुकसान पहुँचा है तथा इससे एकता और तालमेल में बाधा आई है?

दिए जानेवाले कार्य :

1. समर्पण करें कि आप यह नहीं मानेंगे कि आप किसी दूसरे के उद्देश्यों को जानते हैं, लेकिन यदि कोई संदेह हो तो उनसे पूछें।
2. विश्वासियों के बीच एकता बनाए रखने के महत्व पर 10 मिनट का वक्तव्य तैयार करें। वक्तव्य दें और प्रत्युत्तर प्राप्त करें। इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए इसे फिर से लिखें।